आरएनआई नं. . RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. . RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस, उदयपुर
प्रेषण दिनांक: -प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 10 • अंक-2588 • उदयपुर, मंगलवार 25 जनवरी, 2022 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

झाँसी (उत्तरप्रदेश), दिव्यांग जाँच, चयन एवं कृत्रिम अंग माप शिविर

दिव्यांगजनों को समाज की मूलधारा में लाने तथा उन्हें सकलांग बनाने के लिए नारायण सेवा संस्थान जाँच, उपकरण वितरण, कृत्रिम अंग माप व वितरण तथा ऑपरेशन का काम सतत कर रहा है।

ऐसा ही एक और विशाल निःशुल्क दिव्यांग जाँच, उपकरण वितरण तथा कृत्रिम अंग माप शिविर 2 जनवरी 2022 को महाराजा अग्रसेन सरस्वती इन्टर कॉलेज, झाँसी में संपन्न हुआ।

शिविर सहयोगकर्त्ता श्री संजीव जी बुधौलिया अध्यक्ष श्रीराम कथा आयोजन समिति रहे। शिविर में 240 क ा रजिट्रेशन, दिव्यांगों के लिये कृत्रिम अंग माप 35, केलीपर माप 33, ऑपरेशन चयन 44 की सेवा हुई।

उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्री रवि जी शर्मा (विधायक महोदय), अध्यक्षता श्री रामतीर्थ जी सिंहल (महापौर महोदय), विशिष्ट अतिथि श्री पवनजी जी गौतम (अध्यक्ष जिला पंचायत झाँसी), श्री संजीव जी बुधौलिया (अध्यक्ष श्री रामकथा आयोजन समिति), श्री विद्या प्रकाश जी दुबे (पार्षद), श्रीमान बंटी जी राजा (सदस्य समिति), श्री संतोष जी गुप्ता (प्रधानाचार्य), डॉ नवीन जी (ऑर्थोपेडिक सर्जन) केलीपर्स माप टीम सुश्री नेहा जी (पीएनडी), श्री भगवती जी (टेक्नीशियन), शिविर टीम श्री मुकेश जी शर्मा (शिविर प्रभारी), श्री देवीलाल जी, श्री हरीश जी रावत, (सहायक), श्री हितेश जी सेन (रसीद), श्री आदित्य जी (ऐंकर) ने भी सेवायें दी।

कल्याण (महाराष्ट्र), दिव्यांग जाँच, चयन एवं कृत्रिम अंग माप शिविर

नारायण सेवा संस्थान आप सभी की शुभकामनाओं व सहयोग से विश्वभर में दिव्यांग सहायता व सेवा के लिये जानी जा रही है। देश–विदेश में समय समय पर शिविर लगाकर कृत्रिम अंगों का वितरण दिव्यांग सहायक उपकरण एवं दिव्यांग ऑपरेशन जारी है।

ऐसा ही एक और विशाल निःशुल्क दिव्यांग जाँच, उपकरण वितरण तथा कृत्रिम अंग माप शिविर 2 जनवरी 2022 को सेंट लॉरेन्स स्कूल उपाजीधाम के सामने कल्याण में संपन्न हुआ।

शिविर सहयोगकर्त्ता नव अंकुर बहुउद्देशीय सेवाभावी संस्था आयोजन समिति रहा। शिविर में 112 का रजिट्रेशन, दिव्यांगों के लिये कृत्रिम अंग माप 28, कैलीपर माप 07, ऑपरेशन चयन हेतु 14 की सेवा हुई।

उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्री विश्वनाथ आत्माराम जी भोईर (विधायक महोदय), अध्यक्षता श्री श्री प्रभुनाथ जी आत्माराम (नगर सेवक), विशिष्ट अतिथि श्री जयवंत जी दादा (नगर सेवक),सौ. वैशाली जी विश्वनाथ भोईर (नगर सेविका), श्री भारत सूर्यभाण जी राठौड़ (अध्यक्ष), श्री प्रकाश जी बाबू बुगडे (कोषाध्यक्ष), श्री विनोद जी राठौड़ (शाखा संयोजक नादेड़), डॉ विजय कार्तीक (ऑर्थोपेडिक सर्जन) कैलीपर्स माप टीम श्री अमित कुमार जी (पीएनडी), श्री किशन जी (टेक्नीशियन), शिविर टीम श्री हरिप्रसाद जी (शिविर प्रभारी), श्री बजरंग जी, श्री गोपाल जी (सहायक), श्री मुकेश जी सेन (आश्रम साधक) ने भी सेवायें दी।

एक कदम अध्यात्म की ओर

संसार में दो प्रकार के पेड़ पौधे होते हैं' प्रथम अपना फल स्वयं दे देते हैं,' जैसे–आम, अमरुद, केला इत्यादि' द्वितीय अपना फल छिपाकर रखते हैं,' जैसे–आलू, अदरक, प्याज इत्यादि' जो अपना फल अपने आप दे देते हैं, उन वृक्षों को सभी खाद–पानी देकर सुरक्षित रखते हैं, किन्तु जो अपना फल छिपाकर रखते है, वे जड़ सहित खोद लिए जाते हैं जो जीव अपनी विद्या, धन, शक्ति स्वयं ही समाज सेवा में समाज के उत्थान में लगा देते हैं, उनका सभी ध्यान रखते हैं अर्थात् मान–सम्मान देते है। वही दूसरी ओर जो अपनी विद्या, धन, शक्ति स्वार्थवश छिपाकर रखते हैं, किसी की सहायता से मुख मोड़े रखते है, वे जड़ सहित खोद लिए जाते है अर्थात् समय रहते ही भुला दिये जाते हैं।

तीन ऑपरेशन के बाद चल पड़ा प्रीत

खेती करके जीवनयापन करने वाले सूरत गुजरात निवासी अजय कुमार पटेल के घर 11 वर्ष पहले प्री मैच्योर बेबी प्रीत का जन्म हुआ। जन्म के 6 माह तक बेबी को नियोनेटल इंटेंसिव केयर यूनिट में रखा गया। गरीब सिान अजय दुःख के तले कर्जदार भी हो गया पर कर भी क्या सकता था। सामान्य हालात होने पर गुजरात के सूरत, राजकोट और अन्य शहरों के प्रसिद्ध हॉस्पीटल्स में दिखाया पर कहीं पर भी उसे ठीक होने का भरोसा नहीं मिला। घर के पड़ोस में रहने वाले राजस्थान निवासियों ने अजय को नारायण सेवा में जाने की सलाह दी। पहली बार 2019 में दिव्यांग प्रीत को लेकर परिजन उदयपुर आए डॉक्टर्स ने ऑपरेशन के लिए परामर्श दिया और एक ऑपरेशन कर दिया। बच्चे का पांव सीधा हो गया।

दूसरी बार फरवरी 2020 में संस्थान आये तब उसके दूसरे पांव का ऑपरेशन किया गया। दोनों पांवों के ऑपरेशन के बाद प्रीत वॉकर के सहारे चलने लग गया। इसे देख परिजन पुनः अक्टूबर 2020 में उसे संस्थान में लेकर आए तब तीसरा ऑपरेशन हुआ। अब प्लास्टर खुल चुका है... केलीपर्स व जूते पहनने के बाद प्रीत अपने पांव चलने लगा है। अब वह और उसे परिजन प्रसन्न हैं।

प्रसन्नता है प्रेम का झरना : कैलाश मानव

अब कौशल्या जी समझ गयी मैं समझ गयी, कैकयी नीति नहीं मुझे राज्य का खेद नहीं राम–भरत में भेद नहीं।

कितनी महान् बातें कही। सीखने लायक बातें। कैकयी का पुत्र वो भी मेरा पुत्र जैसा है। मेरे लिए राम–भरत में कोई भेद नहीं है। एक तरफ कैकयी देखो और एक तरफ अन्धेरा, एक तरफ उजाला। कौशल्या जाने उजाला और कैकयी जाने अन्धेरो वो कहती है कि राम–भरत में भेद नहीं। पर मैं क्या चाहता हूँ?

मेरा राम बन जावे, यही कहीं रह ना पावे।
उनके पैर पड़ूंगी मैं, कहकर यहीं अड़ूंगी मैं।।
भरत राज्य की जड़ ना हिले
मुझे राम की भीख मिले।

रो पड़ी कौशल्या, रो पड़ी सीता लक्ष्मण जी की आँखों में आंसू आ गये। मैं राम की भीख मांग लूंगी। है मेरी मंझली बहिना छोटी बहिना तुम्हारा पुत्र इतना राज्य करे कि राज्य की जड़ें कोई हिला नहीं पावे पर मुझे राम की भीख मिले। मेरा राम यही कहीं रह ना पावे। कर्त्तव्य की कथा परिवार की एकता तोड़ने का पर्यन्त किया कैकयी ने चाहती तो कौशल्या विद्रोह कर सकती थी। चाहती तो लक्ष्मण को राम भी आदेश दे सकते थे।

ये अन्याय नहीं होना चाहिए लेकिन राम भगवान के चेहरे पर पूर्ण गम्भीरता थी जिन्होनें कह दिया स्वार्थ स्वयं परमार्थ हुआ जिन्होने जंगल को पावन कारक माना। उन राम भगवान के चेहरे पर कोई तनाव नहीं। उसी समय वहा उर्मिला जी जिन उर्मिला का महत्व बार–बार बखाना जाता है। फिर 14 साल लक्ष्मण जी के बिना रही थी।

कौशल्या माताजी की सेवा, सुमित्रा माताजी की सेवा की उन्होने कैकयी की भी सेवा की। कैकयी माता ने जिन्होने उनके पतिदेव लक्ष्मण जी को भी राम भगवान ने बड़ी मुश्किल से आज्ञा दी थी आगे प्रसंग आयेगा। भगवान तो हमेशा साथ में वो कही गये नहीं है। बाबू।

सज्जन की पहचान

एक बार धर्म और अधर्म दोनों अपने– अपने रथ में बैठकर कहीं जा रहे थे। तभी उन दोनों के रथ एक ही राह में आमने–सामने खड़े हो गए। अब कौन दूसरे के लिए रास्ता छोड़े, इस पर उनमें विवाद छिड़ गया। धर्म ने अधर्म से कहा–"भाई! तू अधर्म है, मैं धर्म हूँ। मेरा मार्ग ठीक होता है। मैं पुण्यदायक सभी के द्वारा पूजित व प्रशंसित हूँ, इसलिए मार्ग दिए जाने योग्य मैं ही कहा जा सकता हूँ।"

अधर्म बोला–"हे धर्म! मैं अधर्म हूँ और मार्ग दिए जाने योग्य मैं ही हूँ।" अधर्म आगे बोला–"हे धर्म! मैं अधर्म हूँ और निर्भयी व बलवान हूँ। मैंने आज तक कभी भी किसी को मार्ग नहीं दिया। यह मेरे स्वभाव के विरूद्ध है। मैं तुझे मार्ग कैसे दे सकता हूँ?"

धर्म ने फिर समझाया–"देखो भाई! लोक में पहले धर्म का प्रादुर्भाव हुआ, बाद में अधर्म का। धर्म ही ज्येष्ठ है, धर्म ही श्रेष्ठ है, धर्म ही सनातन है। इसलिए है कनिष्ठ! तू मुझ ज्येष्ठ के लिए मार्ग छोड़ दे।" इस पर अधर्म बोला– "ये सब कोई उचित कारण नहीं है आओ, युद्ध करें। जिसकी जीत हो, रास्ता उसी का।" फिर धर्म ने सुलझाने की कोशिश की–"मैं चारों दिशाओं में फैला हुआ महाबलवान, यशस्वी व अतुलनीय गुणवान हूँ। तू मुझसे कैसे जीतेगा?"

अधर्म बोला–"लोहे से सोना पिघलता है, सोने से लोहा नहीं। आज अधर्म ही धर्म को पराजित करेगा।" यह सुनकर धर्म बड़ा दुखी हो गया। धर्म ने कहा–"मैं युद्ध नहीं करना चाहता। मैं तेरे वचनों के लिए तुझे क्षमा करते हुए जाने का मार्ग देता हूँ।" सज्जन लोगों की यही पहचान होती है।

सम्पादकीय

संसार में अनेक चमत्कार भरे पड़े हैं। प्रकृति स्वयं एक चमत्कारी शक्ति है। अनेक बार ऐसी–ऐसी प्राकृतिक घटनाएं हो जाती हैं जिन पर विश्वास करना कठिन होता है। ऐसे ही व्यक्तियों में भी बहुत सी चमत्कारी बातें होती हैं। एक कहावत है –'चमत्कार को नमस्कार।' संभवत: इसके कारण ही व्यक्ति चमत्कारों की ओर आकृष्ट हुआ हो, पर चमत्कार प्रारंभ से ही व्यक्ति को प्रभावित करते रहे हैं। तन की शक्ति में जब असीमितता हो तो भी वह चमत्कार सा ही लगता है। ऐसे ही कला व विज्ञान के सुन्दर सम्मिश्रण से अनेक लोग चमत्कारिक प्रदर्शन करते हैं। धर्म के क्षेत्र में भी भक्त चमत्कार के लिये उत्सुक व लालायित रहते हैं। चमत्कारों के नाम पर कई बार ठगी भी होती है। किन्तु सबसे बड़ा चमत्कार है मन का। मानव मन कब किससे बदल जाये, कब, कहाँ लग जाये कहा नहीं जा सकता।

यह पक्का है कि चमत्कार में विश्वास वाला धोखा भी खा सकता है, पर यदि हम किसी सिद्धांत, मान्यता, उद्देश्य या लक्ष्य पर विश्वासपूर्वक आगे बढ़ेंगे तो चमत्कार भी संभव है।

कुछ काव्यमय

चमत्कार को नमस्कार है,
लोक मान्यता का विचार है।
चमत्कार हो सत्याधारित,
खोजें, क्या इसका आधार है?
सत्यासत्य खोजकर ही तो,
कहीं किया जा सकता विश्वास।
बिना प्रभावित हुए करें हम,
सत्य प्राप्ति के सहज प्रयास।

- बरदीचन्द सेठ

सीधा हुआ सोनू का टेढ़ा पैर

धामपुर (बिजनौर) उत्तरप्रदेश निवासी अब्दुल वाहिद का पुत्र जन्म से ही पोलियोग्रस्त पैदा हुआ। जीवन के 17 वर्षों में उसे पिता ने कई हॉस्पीटल में दिखाया पर कहीं भी पोलियो रोग की दिव्यांगता में राहत नहीं मिली। परेशान परिवार सोनू की तकलीफ देखकर बहुत दु:खी होता था पर जन्मजात बीमारी के आगे वे लाचार थे। एक दिन टेलीविजन पर नारायण सेवा संस्थान की दिव्यांगता ऑपरेशन सेवा के बारे में देखा तो बिना समय गंवाये वो संस्थान में उदयपुर पहुंच गए। डॉ.ओ.पी. माथुर ने जांच करके दांये पांव का ऑपरेशन कर दिया जिससे उन्हें बड़ा फर्क नजर आया। दूसरे पांव के ऑपरेशन के लिए संस्थान में पुन: आए। सफल ऑपरेशन के पश्चात् सोनू पूर्ण–स्वस्थ है। उन्हें भरोसा है कि वह शीघ्र ही पोलियो की दिव्यांगता को मात देकर अपने पैरों पर चलर गांव पहुंचेगा।

अपनों से अपनी बात

डॉक्टर भगवान हैं

हम लोग 1986–87 तक समझते ही नहीं थे, कि संस्थाओं का रजिस्ट्रेशन क्या होता है? संस्था रजिस्टर्ड कैसे होती हैं। संस्थाओं का नाम क्यों रखा जाता था, बस करना है–कार्य। तो ये मानना था। पी.सी.जैन साहब तत्कालीन कलक्टर साहब एक शिविर में पधारे। पूछा आपकी संस्था का भवन कहाँ हैं? मैंने कहा साहब कुछ भवन की आवश्यकता या अनुभव नहीं है। साहब मेरा तो पी.एन.टी. कॉलोनी में एक क्वार्टर है। उसके नीचे एक छोटा सा मकान किराये का भी ले रखा है। और वहीं एक कमरा व चौक है। वहीं पौष्टिक आहार बना लेते हैं। वहीं जब रवाना होते है गाड़ी में बस में बैठते हैं, तो बोलते हैं।

चालो–चालो रे भाया,
उण कांकड़ मंगरे चालां रे।
आदिवासी बसे भायला,
वाने जाय संभाला रे।।

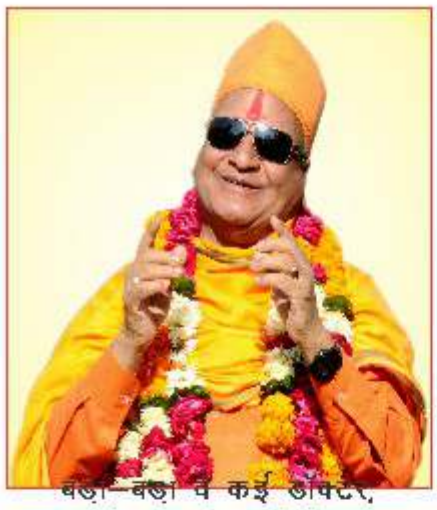

बड़ा–बड़ा वे कई डॉक्टर,
सेवा भावी आवे रे।
तन–मन–धन सूं सेवा करने,
कतराई रोग मिटावे रे।।

ऐसे डॉक्टरों को मैं प्रणाम करना चाहता हूँ। जिनको बड़े–बड़े महापुरुष कहते हैं, डॉक्टर साहब, भगवान के बाद डॉक्टर का ही नम्बर आता है। व्यक्ति समर्पण कर देता है–डॉक्टर के सामने। हाथ–पैर ढीले छोड़ देता है। लीजिए डॉ. साहब ये मेरी देह है। अब आप जो भी ऑपरेशन करेंगे मैं आप पर विश्वास करता हूँ। मैं आप पर फैथ करता हूँ। अब मैं आप पर भरोसा करता हूँ कि आप मेरे को ठीक कर देंगे।

हे! डॉ. साहब–उस रोगी का भरोसा टूट नहीं जावे। वो बहुत–बहुत विश्वास करके आपकी शरण में आया है। आपको भगवान के बाद मान लिया है आप इसकी शरणागति को स्वीकार करके उसको स्वस्थ कर देना। और भगवान से आपके ईष्ट देव से प्रार्थना कर देना हे ! ठाकुर, हे !

परमात्मा, हे ! मेरे ईष्ट देव, हे ! मेरे कुलदेव, हे! मेरे पितृदेव मेरी अंगुलियों से, मेरे अंगूठे से, मेरे हाथ से, मेरी इस देह से अभी एक ऑपरेशन होने वाला है। वो पूर्ण सफल हो, ब्रह्माण्ड इसे सम्भाल लेना। हर पीड़ा को अपनी समझ लेना फिर तो आप निहाल हो जायेंगे। आप घर बैठे तर जाओगे।

– कैलाश 'मानव'

अहंकार घातक है

एक मूर्तिकार उच्च कोटि की सजीव मूर्ति बनाता था, वह सजीव लगती थी, लेकिन मूर्तिकार को उस कला पर घमंड हो गया। उसको आभास होने लगा कि उसकी मृत्यु होने वाली है तो वह परेशानी में पड़ गया। वो जाना नहीं चाहता था, वह मरना नहीं चाहता था। यमराज को भ्रमित करने के लिए उसने अपने जैसी दस मूर्तियाँ बना डाली, योजना अनुसार बनाई गयी मूर्तियों के बीच में स्वयं जाकर बैठ गया। अब आपको और

हमें पता नहीं लग सकता कि वो कौन है? यमदूत जब उसको लेने आये तो एक जैसी ग्यारह आकृतियाँ देकर अचंभित हो गये। उसमें वास्तविक मनुष्य कौन हैं? नहीं पहचान पाये, और वे सोचने लगे कि अब क्या किया जाये? मूर्तिकार के प्राण अगर नहीं ले सके, तो सृष्टि का नियम टूट जायेगा। और अगर सृष्टि का नियम पलटने के लिए मूर्तियाँ तोड़ें, तो कला का अपमान होगा, बड़ा जबदस्त संकट, अचानक यमदूत को मानव स्वभाव के सबसे बड़े दुर्गुण, अहंकार की स्मृति आई। उसने चलते–चलते, इधर–उधर घूमते हुए कहा कि काश! इन मूर्ति को बनाने वाला मिलता तो मैं कहता कि मूर्ति अतिसुन्दर बनायी है लेकिन इसको बनाने में एक त्रुटि रह गयी है। यह सुनकर मूर्तिकार का अहंकार जाग उठा, मेरी मूर्तियों में कमी, ये तो संभव ही नहीं, मैंने तो अपना कार्य पूरा समर्पित भाव से किया है, और आज तक जीवन में मेरी मूर्तियों में कोई कमी नहीं निकाल पाया। सबने वाह– वाह किये, उसका अहंकार बोल उठा। वो तुरन्त उन ग्यारह मूर्तियों में से खड़ा हो गया और बोला कैसी त्रुटि?

यमदूत ने उसका हाथ पकड़ लिया और बस यही त्रुटि कर दी, अहंकार की वजह से तुम भूल गये, तुम ये नहीं जानते कि बेजान मूर्तियाँ बोला नहीं करती।

इससे हमें ये सीख मिलती है, कि हम अहंकार नहीं रखें, अहंकार तो आप जानते ही हैं राजा का न रहा, इस धरती पर जितने भी प्राणी आये है, भले ही वो भूत में आये हो, भले ही प्रजेन्ट में जी रहे हो, भले ही वो भविष्य में आयेंगे, सभी जितने भी प्राणी है किसी का अहंकार नहीं रहा न रहेगा। मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ अहंकार को अपने हृदय से निकाल फेंके।

– सेवक प्रशान्त भैया

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित–झीनी–झीनी रेशनी से)

शाम होते होते तो टीवी. पर खबर चल गई, अखबारों को पता चल गया। इसके बाद तो शुभचिंतको, मित्रों, पत्रकारों आदि के फोनों का तांता लग गया। सब बधाई दे रहे थे। कैलाश ने बधाइयों के बीच ही बोहरा गणेश मंदिर जाकर धोक लगाई और पूजा अर्चना की। जीवन की इस महत्वपूर्ण उपलब्धि पर अपने स्वर्गीय माता–पिता को स्मरण किया तथा बड़े भाई को फोन कर उनका आशीर्वाद लिया। बधाई को फोनो का तांता थमने का नाम तक नहीं ले रहा था। कैलाश सबको कृतज्ञता से जवाब दे रहा था, धन्यवाद दे रहा था।

दो–तीन दिन बाद दिल्ली से औपचारिक पत्र भी आ गया। 8 मई को दिल्ली पहुँचने का निमन्त्रण था। अशोक होटल में 3 दिन ठहरने की व्यवस्था सरकार द्वारा की गई थी। कैलाश 10 लोगों के दल के साथ 7 मई को ही दिल्ली पहुंच गया। बड़े भाई, दोनों छोटे भाई, पत्नी कमला, पुत्र प्रशान्त, पुत्रवधू वन्दना, पुत्री कल्पना, दामाद सुनील सबके लिये होटल का एक सुईट मिल गया, यह तीन कमरों का समूह था, सब आरामी से उसी में ठहर गये।

अशोक होटल के ही एक कक्ष में गृह मंत्रालय का कार्यालय भी बना हुआ था। यहां संयुक्त सचिव बैठे थे। वे सभी पुरस्कार विजेताओं को बुला बुलाकर अलंकरण समारोह की औपचारिकताओं व शिष्टाचार के बारे में समझा रहे थे। उन्होंने समारोह में 15 लोगों को ले जाने के पास दिये। इनमें भोजन, वाहन आदि के पास भी शामिल थे। अधिकारी अलंकरण समारोह की प्रतिकृति सी बनाकर समझा रहे थे कि राष्ट्रपति के सम्मुख किस तरह जाना है, उनके समक्ष किस तरह खड़े होना है तथा पुरस्कार किस तरह ग्रहण करना है।

जब तमाम पुरस्कार विजेताओं की ये प्रक्रियाएं समझा दी गई तो उसके पश्चात् राष्ट्रपति भवन के दरबार हाल में इसकी रिहर्सल भी की गई। राष्ट्रपति की कुर्सी पर उनके सचिव (ए.डी.सी.) को बिठा दिया गया, तमाम विजेताओं को उसी क्रम में बिठाया जिस क्रम में मुख्य समारोह में उन्हें बिठाया जाना था। अलंकरण समारोह की समूची प्रक्रिया का उसी तरह पूर्वाभ्यास किया गया। रिहर्सल के बाद सब होटल लौट गये। यहां कुछ मित्र पहले से प्रतीक्षा कर रहे थे। सबकी इच्छा थी कि शाम को कोन्सिटट्यूशन क्लब में एक प्रेस कान्फ्रेन्स तथा छोटा सा कार्यक्रम किया जाये। कैलाश ने हामी भर दी और शाम को उसमें भाग भी ले लिया।

अंश-217